>

Title: Regarding the loss being incurred by Milk Cooperatives in the country.

**श्री हरिभाऊ जावले (रावेर):** अध्यक्ष महोदया, मैं आपके माध्यम से सदन के सामने देश के दूध उत्पाद किसानों की समस्या रखना चाहता हूं। आज पूरे देश में किसान और दूध उत्पादक बड़ी मात्रा में दूध का उत्पादन कर रहे हैं। कई सहकारी संघ और प्राइवेट कंपनियां दूध खरीदते हैं। देश में हर रोज जितना दूध जमा होता है, उसमें से 60-70 प्रतिशत दूध की बिक्री होती है और बाकी बचे हुए दूध का पाउडर हर संघ और उत्पादक बना देते हैं। दूध के संकलन और बिक्री में आज भी ज्यादा तफावुत आ रही है। इसके कई कारण हो सकते हैं जिसमें बनावट, दूध का उत्पादन भी बड़ी समस्या है। दूध का ज्यादा उत्पादन और कम बिक्री से संकलन करने वाले असमर्थता की स्थिति में हैं। मैं उदाहरण के तौर पर बताना चाहता हूं कि मेरे जलगांव जिले का एक दूध संघ जो हर रोज ढाई लाख लीटर दूध का संकलन करता है, उसमें से डेढ़ लाख लीटर दूध की बिक्री होती है और बाकी के एक लाख लीटर दूध का पाउडर बनाना पड़ता है। आज पूरे देश में दूध पाउडर का रेट 130 रुपये प्रति किलो है और उसके बनाने का खर्च 180 रुपये प्रति किलो है। बीच में सरकार ने कुछ दूध पाउडर निर्यात भी किया था और उसके लिए सब्सिडी दी थी। लेकिन बाद में सब्सिडी बंद हो गई और निर्यात भी बंद हो गया।

मैं आपके माध्यम से सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि छोटे दूध उत्पादक जो किसान भी हैं, जिनका पूरक व्यवसाय दूध है, अगर उन्हें बचाना है तो दूध पाउडर एक्सपोर्ट होना चाहिए। उसके लिए सरकार को सब्सिडी देनी चाहिए। इससे सहकारी संघ बचेंगे और दूध उत्पादकों को भी मदद मिलेगी।

**अध्यक्ष महोदया :**

श्री हंसराज गं. अहीर,

श्री दिलीपकुमार मनसुखलाल गांधी और

श्री दुष्यंत सिंह अपने आपको श्री हरिभाऊ जावले के विषय के साथ सम्बद्ध करते हैं।